

1 8075

18075

18075

... ॥ यश्चाम् ॥ ... ॥ वादन ॥ वन्दना
 ... ॥ ॐ ॥ ... ॥ यज
 ... ॥ वायनयूजानिमित्त्य
 ... ॥ वायनम ॥ ॐ ॥ ... ॥ रास्तेनाययूष्य
 ॥ ॐ ॥ ... ॥ ॐ ॥ ददयादि ॥ ॐ ॥ गंगायै
 नमः ॥ ॐ ॥ ... ॥ ॐ ॥ सत्रस्वयेनमः ॥ ॐ ॥ वक्र
 ... ॥ ॐ ॥ विष्णवेनमः ॥ ॐ ॥ सदागिवायनमः ॥

वन्दनादियूजनै ॥ वायनयूजा ॥ ॐ ॥ ददयूजा ॥ ॐ ॥ ग
 दयनयनमः ॥ ॐ ॥ सुययिनमः ॥ ॐ ॥ दामादनायनम
 ॥ ॐ ॥ गिवायनमः ॥ ॐ ॥ वावयिनमः ॥ ॐ ॥ गत्वायामि ॥
 ॐ ॥ ददयूजा ॥ ॐ ॥ त्वम ॥ ॐ ॥ ग ॥ ना ॥ ॐ ॥ वरु
 ... ॥ ॐ ॥ वावयिनमः ॥ ॐ ॥ दामादनायनम
 ॥ ॐ ॥ ददयूजा ॥ ॐ ॥ त्वम ॥ ॐ ॥ ग ॥ ना ॥ ॐ ॥ वरु
 ... ॥ ॐ ॥ वावयिनमः ॥ ॐ ॥ दामादनायनम
 ॥ ॐ ॥ ददयूजा ॥ ॐ ॥ त्वम ॥ ॐ ॥ ग ॥ ना ॥ ॐ ॥ वरु

उ नमः ॥ सुवाय ॥ ॐ शुभं शुभं ॥ वरु सवि ॥
दीयान् ॥ ॥ जायमगुलकाय ॥ ॥ सुखादि ॥
न्यास ॥ गद्यपद्यनमः ॥ ॐ गद्यपद्यनमः ॥ ॐ
रुद्रा २४ ॥ ॐ दानया नाय २४ ॥ ॐ कुरुया लाय २४ ॥
नानेन २४ ॥ ॐ मरुका लाय २४ ॥ ॐ रुद्रि २४ ॥ ॐ
विनायकाय २४ ॥ ॐ वृषा लाय २४ ॥ ॐ स्कन्दाय २४ ॥
ॐ दक्ष २४ ॥ ॐ वज्राय २४ ॥ ॐ वज्राय २४ ॥ ॐ
॥ ॐ धर्माय २४ ॥ ॐ हानाय २४ ॥ ॐ वेलाहाय २४

ॐ नारायणाय २४ ॥ ॐ शुभमाय २४ ॥ ॐ शुभानाय २४ ॥ ॐ
शुभनाहाय २४ ॥ ॐ शुभेष्टयाय २४ ॥ ॐ शुभजग
काय २४ ॥ ॐ शुभनाय २४ ॥ ॐ स्कन्दाहाय २४ ॥ ॐ ना
जाम्नाय २४ ॥ ॐ यमाहाय २४ ॥ ॐ यनाहाय २४ ॥
ॐ कर्माहाय २४ ॥ ॐ कर्माहाय २४ ॥ ॐ मूला
हाय २४ ॥ ॐ गद्यपद्य २४ ॥ ॐ ॥ वरु रुद्रि २४
नवर्ग ॥ ॐ शुभवाहन ॥ शुभमालासदन ॥ द
कि ॥ नमः ॥ कन ॥ वामेय ॥ वरु रुद्रि २४ ॥

नमो वच ॥ नाग राजा मयूकं ध्यायमानं रुलय
 दी ॥ गद्ययग्य ध्यानयूष्मिन् नमः ॥ **युष्मिन् ॥ हृदयादि**
 ॐ गद्ययग्य २४ ॥ ॐ विष्णुयुगाय २४ ॥ ॐ उक्कदना
 य २४ ॥ ॐ मूषवाहनाय २४ ॥ ॐ लम्बाकुलाय २४ ॥ ॐ
 जाननाय २४ ॥ ॐ यत्रगुरुकाय २४ ॥ ॐ मिद्धिविनायका
 य २४ ॥ ॐ गंगामुखाय २४ ॥ ॐ पावती हृदयाय २४ ॥ ॐ
 उद्ययध्वसु विष्णुयुगाय २४ ॥ **आवाहनादि ॥ ॥**
सूर्ययुगाय ॥ ॐ गद्ययग्य २४ ॥ ॐ गुह्याय २४ ॥ ॐ दान

वालाय २४ ॥ ॐ कृगयालाय २४ ॥ ॐ नन्दिन २४ ॥ ॐ महाका
 लाय २४ ॥ ॐ रुद्रिह २४ ॥ ॐ विनायकाय २४ ॥ ॐ वृषरा
 य २४ ॥ ॐ स्कन्दाय २४ ॥ ॐ दक्षि २४ ॥ ॐ यन्त्राय २४ ॥ ॐ
 मयि नमः ॥ अरुणकय ००दि ॥ ॐ सफग्यवाह
 नाय नमः ॥ ॐ श्रीसूर्याय नमः ॥ **ध्यान ॥** सकिसफन
 धातुरं स्थाना ४ स्कन्धमस्ति ॥ उवाचा ॥ मवन्धक
 यद्वा नागसमन्विता ॥ नकार्यपद्मनागादि नकादि मेदि
 ह्यपि न नके यद्मक नागाजं द्वालावायैदि गन्तव्यं ॥

मगदीमापनैमाकं मगकि ~~सम~~ समन्विनी ~~न~~ नर्वधत्वात्
 मूलन नकयुष्या ~~अ~~ लिगयं ॥ **गोपूययिधनय**
य २४॥ ॥ यो अलि ॥ रुदयादि ॥ **उं** पूययि २४ ॥
 मद्युक्तय २४ ॥ युष्क २४ ॥ गरुतिने २४ ॥ हित्रयत्रगम २४ ॥
 गिनि जाय २४ ॥ गवे २४ ॥ सविगय २४ ॥ जवे २४ ॥ ला
 कसाकि ६८ २४ ॥ उगगय २४ ॥ आदित्याय २४ ॥ **आवा**
रुनादि ॥ ॥ विष्णु वृजा ॥ उं गद्ययतय २४ ॥ गुत्र
 या २४ ॥ दानयानाय २४ ॥ उयाय २४ ॥ विजयाय २४ ॥ चण

य २४ ॥ यत्रयय २४ ॥ भग २४ ॥ विभग २४ ॥ विष्वक्कना
 य २४ ॥ भर्माय २४ ॥ ~~रु~~ त्यादि ॥ आभनगकयत्यादि ॥ गत्र
 जप्ताय २४ ॥ दामादनाय २४ ॥ **आन ॥** उर्द्धगिमभ ४८
 दीचर्कयार्द्धगजभम ४८ ॥ दकि ६८ ॥ चार्द्धकुरुकुरुदवदामाद
 नमभन ॥ **दामादनायमानपूर्व २४ ॥ ॥ त्या अलि ॥**
 रुदयादि ॥ **उं** कणवायवमूर्तयणीयसहिनाये २४ ॥ **उं**
 नायायनविष्णुमूर्तयवागोष्ट्रीसहिनाये २४ ॥ **उं** माध
 वायव्यमूर्तयकानीसहिनाये २४ ॥ **उं** ६८ ॥ गविन्दायकि

दि २४ नावायनय

निमूर्त्ययविद्यासहिताये २४॥ **ॐ** विष्णवेदकमूर्त्ययगान्ति
सहिताये २४॥ **ॐ** मधुगुदनायवायूमूर्त्यय ॥ निमूर्त्यय २४॥
ॐ त्रिविक्रमायजलमूर्त्ययवैष्णवाय २४॥ **ॐ** वाम
नायधनमूर्त्यययानिमूर्त्यय २४॥ **ॐ** श्रीधनायगि
निमूर्त्ययत्रिमूर्त्यय २४॥ **ॐ** हृषीकेशायचन्द्रमूर्त्य
यमायासहिताये २४॥ **ॐ** यमनारायणसूर्यमूर्त्ययधाम्नि
ताये २४॥ **ॐ** कामादनायशुक्लिमूर्त्ययसहिताये २
४॥ **ॐ** यन्त्रागमायब्रह्ममूर्त्ययलक्ष्मीसहिताये २४॥ **ॐ**

गणेशकाय २४॥ **ॐ** यमरुद्रकाय २४॥ **ॐ** ब्रह्मरुद्रकाय २
४॥ **ॐ** गजराजकाय २४॥ **ॐ** गजराजकाय २४॥ **शिवारु**
नादि॥ **॥ निवद्यूजा ॥** **ॐ** गणपतये २४॥ **ॐ** गुरुय २४॥
ॐ वात्रपालाय २४॥ **ॐ** कृष्णपालाय २४॥ **ॐ** नन्दिन २४॥
ॐ महाकालाय २४॥ **ॐ** हृन्नि ॥ २४॥ **ॐ** विनायकाय २४॥
ॐ वृषाय २४॥ **ॐ** स्कन्धाय २४॥ **ॐ** यद्वी २४॥ **ॐ** ब्रह्माय २४॥
ॐ अश्विन्यादि ॥ **ॐ** अश्विनकथयति ॥ **ॐ** वृषास्त्राय
२४॥ **ॐ** महागिदाय २४॥ **॥ अन्न ॥** **ॐ** अन्ननीवृषरात्र

म
मि गूलं द्या लभानि धीं । वनचन्द्रावकागश्च चन्द्रमौलिमि
लाचनी ॥ गखकन्दन्धुभवलं पश्चवर्कं गिलाचनी । सदा
गिवस्यद्वयन वृषभूरं विचिनय ॥ वरुणसुखमहात्मानं
हागलननसुखी । मारुतर्द्धवर्धनमकसूयधनी वि
रुं ॥ वामरुगोहितादेवी मीषयुरुमिगानना । उमामहेश्व
रैर्युयं सर्वकामसु लयदी ॥ **आनपूर्यन्तमः ॥ ॥ एयः**
लि ॥ ॐ मां हूँ मरुदि वायपाद् ॥ हृदयादि ॥ ॐ महा
देवाय चन्द्रमूर्तये ॥ उमा सहिताय नमः ॥ ॐ ह्रीं ग

नायसूर्यो मूर्तये कात्यायनी सहिताय नमः ॥
ॐ उमाय वायु मूर्तये देवी सहिताय नमः ॥ ॐ उदाय
शुभिमूर्तये इक्ष्म सहिताय नमः ॥ ॐ रुवाय जलमू
र्तये रुद्रा सहिताय नमः ॥ ॐ सर्वयक्तिमूर्तये
सूरुद्रा सहिताय नमः ॥ ॐ उदयूपाय श्रुधा नमः ॥
यकालनागि सहिताय नमः ॥ ॐ यलुपतय यजमानमूर्तये
यमरुगोहिनी सहिताय नमः ॥ ॐ रुमाय आकाशमूर्तये
नवनी सहिताय नमः ॥ ॐ महाश्वराय गिनिमूर्तये रुतेना

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

I	2188
R. 118	R. 118

Kartikabha
Pūjā Vidi

ॐ नमो भगवते
विष्णवे
ॐ नमो भगवते
विष्णवे
ॐ नमो भगवते
विष्णवे

ॐ नमो भगवते
विष्णवे

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

त्यानीलात्यलंरूपं नागकार्याविवागिद ॥ ॥
 जगियुष्य ॥ सर्वसायैव्यजानीनां जात्य ॥ ॥ ॥
 भास्मता ॥ जगतीनामधिपसर्वसं शुद्धजगतीयुष्यस्य ॥
 जगतीयुष्यस्यदानन गन्तव्यं ॥ ॥ ॥
 यत् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 इति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 जादुलंनगुदीं सम्मग्नानिमानव ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ कन्द्योरुसमं जातं यद्विन्दमनं गुरुं । गृह्णीत यद्
 वीक्षणं सुकिम्किम् इदं हि मे ॥ ५ ॥ **गायान** ॥ मूत्र
 रुस्यलं जाति कुन्दं मनचम्यकं । जयनी कुण्डुमञ्जु
 मि कुण्डुयमवदनी ॥ द्वादशगिन्निनीमाला नरुमे मरुवो
 मगुत्र ॥ चकधूरुत्रमं काणं निगन्ध्यापू
 जिगानिर्वी । मल्लकयुधानेष्ट निवली
 केमहीयनं ॥ **श्रुयामार्ज** ॥ श्रुयामार्जमरु
 सुम त्वयामार्जगता निव । मंकत्रयनदलानि

वृद्धलाकं मगच्छति ॥ **विल्वयगु** ॥ यद्मानाष्ट
 मरुसम्य सम्यदरुस्ययल्लं । गत्यल्लरुगेयर्द
 त्वाविल्वस्यल्लरुनं ॥ सर्वकोमयुदं विल्व दत्रिडस्य
 लमर्न विल्वयगुत्यल्लनासि यनगुष्टानि मंकत्र ॥
नागयूष ॥ नागयूषे मरुदेव यूजिगासिमयायुता । उ
 मायासहितं ४ सम्यक् सुखकामाके युधारुवन् ॥
धानयूष ॥ धानयूषे मरुयूष गन्धयेन त्राप
 यन् । श्रुयत्मनरुवनं ॐ न्दुस्यो मरुनीरुवन् ॥

निज
 श्रुति
 ज

नि
 पा
 पा
 ना
 प
 वि
 व
 व
 पु

नानाभूतविशेषानां कर्म
वीजं ज्ञेयमात्मनोऽपि

अर्कपत्र ॥ कालिकेमासिसंवाक्य अर्कपत्रेर्हर्त्रिय
ऊन । ननयुं प्रदानेन विष्णुलाके महीयते ॥ ॥
गान्धर्व ॥ कन्दवम्यकककोल मल्लिकागन्धमालती
। अर्कधूतमन्दाल गृहाद्येन मन्त्र ॥ **धूप**
॥ मृगान्धिमिषिर्नधूप अथुयः सर्वदेवता । मया
रुद्राकृर्नदेवी गृह्णीते न कर्मवी ॥ **दीप** ॥ त्व
मायिदेवताः सर्वान् जानूयेति विहित । तमः प्रकाश
संसात्र यथादीयेत कालिर्न ॥ **रुल** ॥ रुलश्च वि

मिजानीयम् । यथासुमी कर्म
नानाभूतविशेषानां कर्म

विष्णुयुक् यनमाक उलीरुली । यिष्ययुक् अमृग
गृह्णीते मया ॥ **यकान्त** ॥ मादकेष्टनसंयुक् सर्व
यक्तसमायुर्न । गृह्णीते दीयतीति विष्णु यनगुरुचर्मसर्व ॥
नवय ॥ अर्नयुष्टिकनेरु यकान्ते वरुधकृते । नाना
रुलविचित्राणि गृह्णीते न कर्मवी ॥ **गाम्भूल** ॥ य
गजानीरुलदत्ता जानीयतु न येवच । लवंगमथकको
ल मलाकल्लकर्म ॥ गाम्भूलीना किमलय स्रजला
कर्मवायुयात ॥ **०००** **रुलपूयादि जगन्नादि** ॥
धर्मीस्ति न सदा । सर्वकामश्च मोखीच गिवला क

सगच्छति ॥

नमोऽर्धं ॥ ॐ ज्येष्ठवराकल्य ॥ अथादि ॥ ॐ यजमानस्य का
लिकेवग निवादि यश्च यद्येव ॥ ॐ दीर्घं गृहानस्य हा
॥ निवायमर्धं हिताथय सर्वथाय रुत्राय च । निवयसादम
रुक्ता दुरुगाधमिदं पुत्रा ॥ कायवाकमनयापश्च नृपाय
त्यज्जिह्वं । प्रागसाकरयताम यजुर्गैव निवयुत्र ॥ ॥ न
खगायममादयेत्यादि ॥ ॥ म० ल० ज० य० सा० व० ॥ ॐ नमो
गायत्र्य ॥ यजुर्गैव नृपाय विधावद नि यत्रैव सुभा र्धियुत्रैव
गमन्य । विस्मर्त्तर्गैकात्रैवामी ग्यत्रैव नमो नमा विधि

विनयकाय ॥ ॥ ॐ नमोऽर्धं सूर्याय ॥ उक्ता नारी रुक्
रुक्तामिव दमन ॥ सा लु सिन्दूरं जलं त्रिकांशं कृत्रि
काद्यत्र दय गि त्रिघ्नी आरुध्वा त्राडवस्य । आर्यात्यानुल
कालं केमलवनत्रयं त्रिघ्नावा विरु लै रुपासु कौ
सयानोऽनुवनमरु नवा रानवा रानवीया ॥ ॥ ॐ
नमो नारायणाय ॥ यीतवर्गं गजं गिरिव चक्रयमभ
त्रैविरु । कामादनाहिके मास भियगियेणामा मिह ॥
॥ ॥ ॐ नमोऽर्धं निवाय ॥ नमस्तुते निवयुत्रैव यद्वयम

प्रचात्रव। गेला कानगत्रात्रकमूलसमायलमहव
 ॥ सर्वकामसंलभय उगत ४ सर्वदा निर्व। ८ गवा
 क्रोन्त्यापयि लिर्वरुवतु सर्वदा ॥ निर्वमाद्यो नि
 वन्म ८ ॥ निवमन्तु सर्वदा । सर्वेषां निवरु काना
 मन्त्रजानाश्चन ४ निर्व ॥ मन्त्रपृष्ठ समासीनं मृषिस्त
 द्ये ४ समावृत्तं । लोकान्गुरुकर्तृ सर्वकृतेन्द्रिकेण
 र्त्र ॥ ॥ ॐ नमो ८ गोत्रे ॥ इति श्रीमल्लवर्णनी नीलान्त
 नदलकृष्ण । वनदात्मनुरुसाच दिव्यजीविधनू

विधी ॥ यथासनस्ति तद्विधी श्रीमन्मन्त्रावतानिधी ।
 अध्यात्रणी महादेवी नृदगाकिंमहेश्वरी ॥ यथास
 नस्ति तादृशी श्रीमन्मन्त्रावतानिधी । अध्यात्रणी
 महादेवी नृदगाकिंमहेश्वरी ॥ नवैकुलामहादे
 वी सर्वकामार्थसाधिनि । सर्वपा ॥ ॥ पापाहं न्यादि ॥
 अग्रगन्तादि ॥ कमन्त्रनमस्तु ॥ कथमवर्तन ॥ न्यासया
 या ॥ विसर्जयन् ॥ गच्छगच्छ यत्रैकानं पुत्राद्यपुत्र
 वारुम ४ यगुवक्तादयादेवावसनिदुःखकणवो ४
 ५ पविनिम्बु ॥ महाहोत्रा

॥ ८ ॥ श्रीमन्मन्त्रावतानिधी

॥ ॥ उदयनमह्य ॥ अतिथकचन्दनादिआशिर्वाद्य ॥ सूर्य
साकिंक्रयौ ॥ ॥ निकालिकवनमिवादिपक्षाययपूजा
विधिः ॥ ॥ ॥ संवत् १८७० ॥ अत्राशुदि १३ तारा ३ नदिनका
किपूत्रवातिनविषकूलश्रीवासीविलाससम्मत् ॥ ॥ लि
खितसुपूर्वमहि ॥ ॥ अहमसुदीर्घमायुः ॥ ॥

॥ अधिमासवृत्तः ॥ हेमाद्रौपादौ ॥ अधिमासेतुसंप्राप्ते
गुडसप्पियुक्तानिच ॥ त्रयस्त्रिंशत्तिसूयानिदातव्या
निदिनेदिने ॥ आज्यानिगुडमिफ्रानिअधिमासेनृ
पोत्तन ॥ अधिमासेतुसंप्राप्तेत्रयस्त्रिंशत्तुदेवता
॥ उद्दिश्यपूषदानेनपृथ्वीदानफलंतमेत ॥ त्रय
स्त्रिंशत्तुपूषान्नकांश्यपात्रेनिधायच ॥ सद्युतंस
हिरण्यपंचव्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ ॥ पुरुषोत्त

ध्यानं॥ आदिमासस्य शस्त्रस्य दक्षिणेशं स्वक्रयोः॥ पद्मगदामु
 मं पूजनं यथाविधिना॥ अपूपोत्सर्गः॥ नारायणाय
 गद्दीजभास्करप्रतिरूपकः॥ वृत्तेनानेन पुत्रांच सं
 पदं चापि वृद्धये॥ विष्णुरूपी सहस्रांशुः सर्वपाप
 प्रणाशनं॥ अपूपान्नपुदानेन मम पापं व्यथो ह
 तु॥ ॥ मंत्रेणानेन यो दद्यात्त्रयस्त्रिंशदपूपमा
 न॥ प्राप्नोति विपुलां लक्ष्मीं पुत्रपौत्रादि संपदाः॥ ॥

वासे नानावर्ग्यं शुभमनः॥

अर्पणं॥ कुरुक्षेत्रे समं॥ सां कालपूर्वदि यो हरिः
 ॥ पृथ्वीसममिदं दानं गृहाराप्ररूपोत्तम॥ मत्ता
 तांच विबुद्धार्थम्यापप्रशमनाय च॥ पुत्रपौत्रादि
 वृद्धार्थं न वदास्यानिभास्करः॥ स्तोत्रं॥

Kāṣṭhika Vāṭapūṣṭya Vīṭh.

2188

2188

महाराष्ट्र
२६